नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 021
दि. 21.10.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

सेना और पुलिस का मिशन एक ही है: राजनाथ सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा पर जोर देते हुए कही ये बातें

(जीएनएस)। नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने दिल्ली में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर आयोजित पुलिस स्मृति दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया और कहा कि देश की सुरक्षा के मामले में सेना और पुलिस का मिशन अलग नहीं बल्कि एक समान है। उन्होंने बताया कि भले ही सेना और पुलिस अलग-अलग मंच पर काम करती हों, लेकिन उनका उद्देश्य हमेशा देशवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

राजनाथ सिंह ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि गृह मंत्री के रूप में उन्होंने पुलिस की कार्यशैली को करीब से देखा, वहीं रक्षा मंत्री के रूप में सेना की गतिविधियों का भी उन्होंने गहन अवलोकन किया है। उन्होंने कहा, "चाहे दुश्मन सीमा पार से हमला करे या देश के अंदर किसी रूप में छिपा हो, सुरक्षा के लिए खड़ा हर व्यक्ति समान भावना का प्रतीक है।"

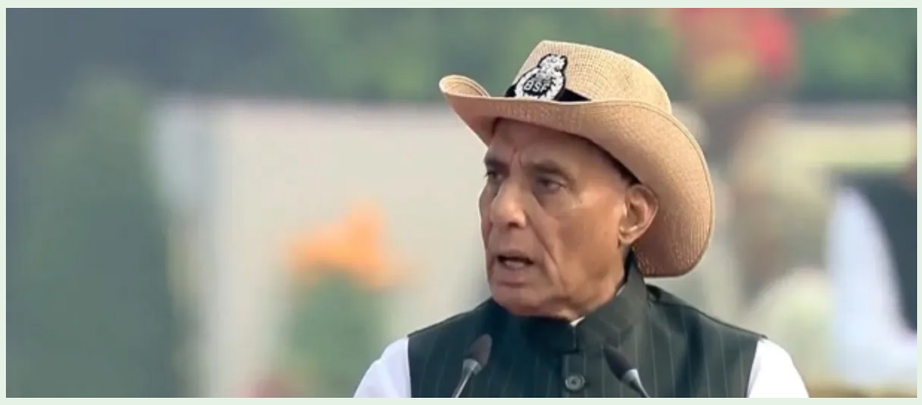

रक्षा मंत्री ने पुलिस की सराहना करते हुए कहा कि पुलिस न केवल अपने औपचारिक दायित्वों का निर्वहन करती है, बल्कि नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों का भी पालन बखूबी करती है। उन्होंने बताया कि आज देशवासियों का पुलिस पर भरोसा बढ़ा है और यह भरोसा नागरिकों और सुरक्षा बलों के बीच सकारात्मक बदलाव का प्रतीक है। राजनाथ सिंह ने नक्सलवाद को लंबे समय से देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती बताया और कहा कि सरकार और सुरक्षा बलों के संयुक्त प्रयासों से इसे नियंत्रित किया जा रहा है। उन्होंने विशेष रूप से पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ और स्थानीय प्रशासन के संयुक्त प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बताया कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अब सड़कें, स्कूल, कॉलेज और अस्पताल बन रहे हैं, और पूर्व में 'रेड कॉरिडोर' कहलाने वाले जिले अब विकास के गलियारों में बदल रहे हैं।

रक्षा मंत्री ने कहा कि सुरक्षा बलों और पुलिस की लगातार मेहनत के कारण नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या अब बहुत कम रह गई है और अगले साल मार्च तक इसे पूरी तरह समाप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। यह उपलब्धि सरकार और सुरक्षा बलों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है।

उन्होंने यह भी कहा कि लंबे समय तक समाज ने पुलिस के योगदान को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2018 में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक की स्थापना के साथ पुलिस को आधुनिक हथियार, बेहतर सुविधाएं और सम्मान प्रदान किया गया।

राजनाथ सिंह ने अंत में कहा, "अमृत काल में प्रवेश करते हुए और 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, आंतरिक और बाह्य सुरक्षा का संतुलन बनाना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। सेना और पुलिस भले ही अलग-अलग मंच पर खड़ी हों, लेकिन उनका मिशन हमेशा एक ही रहेगा—देश की सुरक्षा।"

मशहूर कॉमेडियन असरानी का निधन बॉलीवुड की हास्य दुनिया में गहरा शोक

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पूरे देश में दीपावली का पावन पर्व धूमधाम से मनाया जा रहा था, लेकिन इसी बीच बॉलीवुड और दर्शकों के लिए एक दुखद खबर ने सभी को स्तब्ध कर दिया। मशहूर अभिनेता और कॉमेडियन असरानी का 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। लंबे समय से फेफड़ों की समस्या और उम्र जनित बीमारियों से जूझ रहे असरानी सोमवार शाम लगभग चार बजे अंतिम सांस ली। उनके निधन की खबर से न केवल परिवार और मित्रों बल्कि पूरे फिल्म उद्योग में शोक की लहर दौड़ गई है।

असरानी का जन्म 1 जनवरी 1941 को जयपुर में हुआ। उन्होंने सेंट जेवियर्स स्कूल से अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की और बाद में राजस्थान कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल की। 1967 में फिल्म 'हरे कांच की चूड़ियां' से बॉलीवुड में कदम रखने वाले असरानी ने तुरंत ही अपनी कॉमिक प्रतिभा से दर्शकों का दिल जीत लिया। उनके सहज हाव-भाव, चेहरे के भाव और संवाद अदायगी ने उन्हें हिंदी सिनेमा की हास्य शैली का अविभाज्य हिस्सा बना दिया।

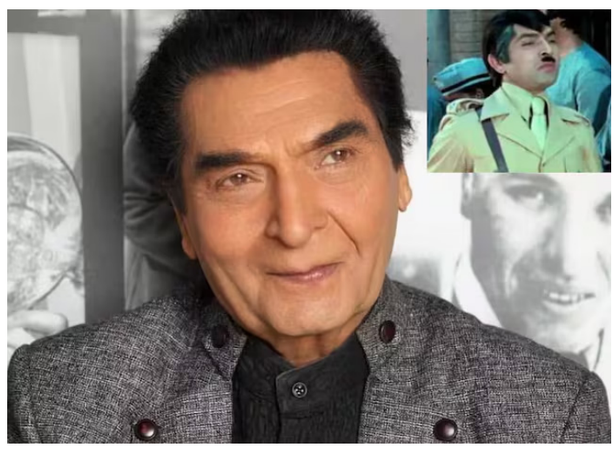

1970 के दशक से लेकर 2000 के दशक तक असरानी ने लगभग हर दशक में अपनी अभिनय क्षमता और कॉमिक टाइमिंग से दर्शकों का मनोरंजन किया। उनकी यादगार फिल्मों में 'शोले', 'चुपके-चुपके', 'छोटी सी बात', 'रफूचक्कर', 'फकीरा', 'हीरा लाल पन्नालाल', 'पति पत्नी', 'हेराफेरी', 'हलचल', 'दीवाने हुए पागल', 'गरम मसाला', 'भागमभाग' और 'मालामाल वीकली' जैसी फिल्में शामिल हैं। इन फिल्मों में उनका अभिनय दर्शकों के दिलों में हमेशा के लिए छाप छोड़ गया। असरानी की कॉमेडी केवल फिल्मों तक सीमित नहीं थी। उन्होंने थिएटर और छोटे पर्दे पर भी अपने हास्य और अभिनय का लोहा मनवाया। उनका सरल व्यक्तित्व और सहज हास्य शैली उन्हें सभी उम्र के दर्शकों के लिए प्रिय बनाती थी। उनके अभिनय में जो सहजता और प्राकृतिक हास्य था, उसने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में हास्य की नई परिभाषा दी।

असरानी के निधन पर फिल्म उद्योग के कई दिग्गजों और उनके सहयोगियों ने सोशल मीडिया और अन्य मंचों पर शोक व्यक्त किया। कलाकारों और प्रशंसकों ने उनके योगदान को याद करते हुए कहा कि उनकी कॉमिक टाइमिंग और हास्य शैली हमेशा यादगार रहेगी। अभिनेता का जाना केवल एक कलाकार के खोने का संकेत नहीं है, बल्कि भारतीय सिनेमा में हास्य और मनोरंजन की दुनिया में एक युग के समाप्त होने का प्रतीक है।

उनकी फिल्में और अभिनय आने वाली पीढ़ियों के लिए मनोरंजन और प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। असरानी ने अपने जीवन और करियर के माध्यम से दर्शकों को हंसने और जीवन में हल्केपन का आनंद लेने का अद्वितीय अनुभव दिया। उनके योगदान ने बॉलीवुड की हास्य कला को एक अमर विरासत दी है, जो हमेशा याद रखी जाएगी। उनके बिना बॉलीवुड की हास्य दुनिया अधूरी है और उनके चाहने वाले हमेशा उन्हें याद करेंगे।

पेरिस के लौवर म्यूज़ियम में दिनदहाड़े हुई चौंकाने वाली चोरी, सुरक्षा व्यवस्था पर उठे गंभीर सवाल

(जीएनएस)। पेरिस। फ्रांस की राजधानी पेरिस के प्रतिष्ठित लौवर म्यूज़ियम में रविवार को दिनदहाड़े हुई चोरी ने पूरी दुनिया को हैरान कर दिया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार कुछ अत्यंत पेशेवर चोरों ने महज सात मिनट के भीतर संग्रहालय की ऐतिहासिक गैलरी "Apollo's Gallery" से बहुमूल्य शाही गहने लूट लिए। इस गैलरी में 19वीं सदी की महारानी यूजिनी का ताज और अन्य दुर्लभ शाही धरोहरें रखी गई थीं।

मौके पर मौजूद चश्मदीदों के अनुसार, चोर स्कूटर पर आए और पावर-ऑपरेटेड फर्नीचर लिफ्ट और बिजली से चलने वाले औज़ारों की मदद से खिड़की तोड़कर अंदर दाखिल हुए। उन्होंने ताज और अन्य गहनों को लूटकर उसी स्कूटर पर फरार होने से पहले सिर्फ़ एक हीरे-मोती जड़ा ताज नीचे गिरा दिया, जो क्षतिग्रस्त हालत में संग्रहालय के पास बरामद हुआ। यह चोरी सुबह 9:30 से 9:40 के बीच हुई, जबकि म्यूज़ियम सामान्य रूप से 9 बजे ही खुल चुका था। फ्रांस के आंतरिक मंत्री लॉरेंट नेज़ ने बताया कि प्रारंभिक जांच में तीन से चार लोगों की संलिप्तता सामने आई है। चोरी गई गहने इतनी दुर्लभ और ऐतिहासिक हैं कि उन्हें सामान्य बाजार में बेचना लगभग असंभव है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि चोर इन्हें तोड़कर रत्न और धातु के रूप में बेचने की कोशिश कर सकते हैं। यह घटना पेरिस पुलिस मुख्यालय से महज़ 800 मीटर की दूरी पर हुई, जिससे सुरक्षा व्यवस्था पर कई सवाल उठ खड़े हुए हैं। हाल के महीनों में फ्रांस के अन्य म्यूज़ियम्स से भी चोरी की बड़ी घटनाएं सामने आई हैं। कुछ सप्ताह पहले नेचुरल हिस्ट्री म्यूज़ियम से 6 लाख यूरो मूल्य का सोना चोरी हुआ था, वहीं लिमोज़ शहर के संग्रहालय से कीमती कलाकृतियां लूटी गई थीं। लौवर म्यूज़ियम से चोरी अत्यंत दुर्लभ मानी जाती है, इसलिए यह घटना विशेष रूप से चौंकाने वाली है। फिलहाल, पुलिस ने मामले की व्यापक जांच शुरू कर दी है और संग्रहालय को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है ताकि सबूतों की सुरक्षा की जा सके। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस घटना ने फ्रांस के सांस्कृतिक विरासत स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं और आने वाले दिनों में सुरक्षा मानकों में बड़े बदलाव किए जाने की संभावना है।

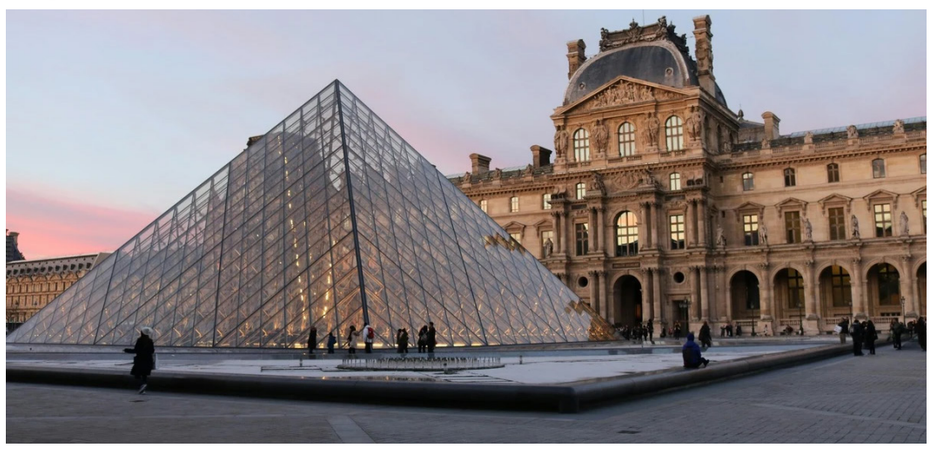

यह चोरी न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए चिंता का विषय है, बल्कि यह इस बात का भी संकेत देती है कि पेशेवर अपराधी आज अत्याधुनिक तकनीक और योजनाओं के साथ किसी भी प्रतिष्ठित स्थल को निशाना बना सकते हैं। आगामी जांच और सुरक्षा उपाय इस घटना के बाद फ्रांस के म्यूज़ियम्स के लिए एक महत्वपूर्ण सबक साबित होंगे।

महागठबंधन में सीट बंटवारे को लेकर सियासी घमासान, भाजपा ने लगाया पैसे लेकर टिकट बेचने का आरोप

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के मद्देनजर महागठबंधन और भाजपा के बीच सियासी तकरार और तेज हो गया है। बिहार भाजपा अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने सोमवार को महागठबंधन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि गठबंधन में आंतरिक कलह है और उम्मीदवारों को पैसे लेकर टिकट बेचा जा रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार के मतदाता इस प्रक्रिया को देख रहे हैं और इससे साफ जाहिर होता है कि महागठबंधन में सीटों का बंटवारा अभी तक नहीं हो पाया है। उन्होंने सवाल उठाया कि ऐसे में अगर महागठबंधन सरकार बनती है तो उसका संचालन कैसे होगा।

जायसवाल ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की भी आलोचना की और कहा कि वे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर से जुड़े 'जन नायक' शब्द को छीनने की कोशिश कर रहे हैं। उनके अनुसार, यह न केवल बिहार बल्कि पिछड़े समुदाय का अपमान है। उन्होंने आरोप लगाया कि महागठबंधन के भीतर साझा सीटों और उम्मीदवारों के चयन को लेकर विवाद गहरा रहा है और यह अंदरूनी कलह गठबंधन की विश्वसनीयता को प्रभावित कर रही है। इससे पहले, लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान ने भी साझा सीटों को लेकर विपक्षी महागठबंधन की आलोचना की थी। उन्होंने कहा कि राजनीति में 'दोस्ताना लड़ाई' जैसी कोई चीज़ नहीं होती; या तो दल एकजुट होते हैं या आपस में प्रतिद्वंद्वी। पासवान ने स्पष्ट किया कि आरजेडी और कांग्रेस के बीच साझा सीटों पर लड़ाई न केवल अनुचित है, बल्कि इससे विपक्षी दलों की रणनीति कमजोर हो सकती है। इस बीच, राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) ने सोमवार को बिहार विधानसभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की सूची जारी की। सूची में राज्य भर के 143 उम्मीदवार शामिल हैं, जिनमें 24 महिला उम्मीदवार भी हैं। उम्मीदवारों की घोषणा दूसरे चरण के नामांकन के आखिरी दिन की गई। इस सूची में तेजस्वी यादव राघोपुर निर्वाचन क्षेत्र से, ललित यादव दरभंगा ग्रामीण से और दिलीप सिंह बरौली से चुनाव लड़ेंगे। बिहार विधानसभा चुनाव के लिए मतदान 6 और 11 नवंबर को दो चरणों में होगा, जबकि मतगणना और परिणाम 14 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। चुनाव को लेकर सियासी गतिविधियां तेज हो चुकी हैं और महागठबंधन के भीतर सीट बंटवारे और साझा उम्मीदवारों को लेकर जारी विवाद से विपक्षी दलों के चुनावी रणनीति पर प्रभाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है। इस बीच भाजपा ने महागठबंधन की आंतरिक कलह और कथित पैसे लेकर टिकट बेचने की प्रक्रिया को चुनावी मुद्दा बनाने की तैयारी शुरू कर दी है।

पंजाब के पूर्व डीजीपी मोहम्मद मुस्तफा पर बेटे की हत्या का मामला दर्ज, परिवार पर गंभीर आरोप

(जीएनएस)। चंडीगढ़। पंजाब के पूर्व डीजीपी (मानवाधिकार) मोहम्मद मुस्तफा और उनके परिवार के खिलाफ एक गंभीर मामला दर्ज किया गया है। पंचकूला पुलिस ने मोहम्मद मुस्तफा पर उनके पुत्र अकील अख्तर की हत्या और आपराधिक षड्यंत्र रचने का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज की है। इस एफआईआर में उनके परिवार के अन्य सदस्यों—पूर्व मंत्री रजिया सुल्ताना (पत्नी), उनकी बेटी और पुत्रवधू—के नाम भी शामिल हैं।

मामला तब उजागर हुआ जब अकील अख्तर के पड़ोसी शमसुद्दीन ने पंचकूला पुलिस कमिश्नर को शिकायत दी। शमसुद्दीन ने दावा किया कि अकील की मौत सामान्य नहीं थी, बल्कि यह किसी साजिश का परिणाम थी। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया कि अकील की पत्नी और पिता के बीच अवैध संबंध थे और पूरे षड्यंत्र में रजिया सुल्ताना भी शामिल थीं।

पुलिस ने शिकायत के आधार पर पंचकूला के मनसा देवी थाने में मोहम्मद मुस्तफा, रजिया सुल्ताना, उनकी बेटी और पुत्रवधू के खिलाफ धारा 103(1) और 61 बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अकील अख्तर की मौत 16 अक्टूबर की देर रात पंचकूला स्थित उनके आवास में संदिग्ध परिस्थितियों में हुई थी। परिवार ने इसे दवाइयों की ओवरडोज से हुई मौत बताया था, लेकिन बाद में एक वीडियो सामने आया जिसमें अकील ने 27 अगस्त को कहा था कि उसके परिवार के लोग उसकी हत्या की साजिश रच रहे हैं। वीडियो में उसने अपने पिता और पत्नी के बीच अवैध संबंध होने का भी खुलासा किया था।

पुलिस फिलहाल इस मामले की गहनता से जांच कर रही है और सभी साक्ष्यों और वीडियो फुटेज का विश्लेषण कर आरोपों की पुष्टि करने की कोशिश कर रही है। यह मामला न केवल पूर्व डीजीपी जैसे उच्च पदस्थ अधिकारी के परिवार से जुड़े होने के कारण सुर्खियों में है, बल्कि इसमें उठाए गए गंभीर आरोप पूरे प्रदेश में सामाजिक और राजनीतिक हलचल पैदा कर रहे हैं।

संपादकीय

पर्व की अस्मिता

उल्लास-उमंग के साथ राष्ट्र की आर्थिकी को नई ऊर्जा देने वाला त्योहार दीपावली सही मायने में सादगी व उजाले का त्योहार है। महानगरीय जीवन की एकरसता व तनाव से मुक्ति दिलाने वाली पर्व श्रृंखला के जहां आध्यात्मिक-धार्मिक मायने हैं, वहीं ये पर्व हमें नई ऊर्जा से भर देते हैं। हमारे रिश्तों को नई ऊष्मा देते हैं। एक मायने में लक्ष्मी हर छोटे-बड़े काम-धंधे से लेकर उद्योगों में इस पर्व के दौरान आती है। समृद्धि की रोशनी श्रम और सकारात्मक जीवन व्यवहार से आती है। लेकिन हाल के वर्षों में हमारी जीवन शैली और कार्य संस्कृति में व्यापक बदलाव आए हैं। जीवन व्यवहार में कृत्रिमता और दिखावे की संस्कृति का बोलबाला हुआ, जिसकी गहरी छाया हमारे पर्व-त्योहारों पर भी नजर आई है। भारत पर्व-त्योहारों का देश हैं, जिनके गहरे निहितार्थ हैं। ये पर्व-त्योहार हमारे ऋतु चक्र से जुड़े हैं, जिसका आधार हमारी किसानी संस्कृति है। वर्षा ऋतु से जीवन में आई नीरसता व इसके प्रतिकूल प्रभावों से मुक्ति की राह दिखाती है पर्व श्रृंखला। लेकिन हमें सही मायने में पर्व का मर्म समझना चाहिए। सादगी, सात्विकता और इसके आध्यात्मिक पक्ष के गहरे निहितार्थों की हमें अनदेखी नहीं करनी चाहिए। लेकिन हाल के वर्षों में यह त्योहार दिखावे व धन के भौंडे प्रदर्शन का सबब बनता जा रहा है। इस पर्व का असली मकसद यही है कि गरीबी की देहरी पर भी उजाला हो। प्रकाश का ही नहीं, समृद्धि का भी। उसमें समाज की बड़ी भागेदारी जरूरी है।

यह विडंबना ही है कि हाल के वर्षों में इस पर्व के मर्म के विपरीत कृत्रिमता, दिखावा, परंपरा के सतही विकल्प और औपचारिकताओं ने गहरी पैठ बना ली है। बाजार इतना हावी है कि वह दिवाली की पूजा आपको ऑनलाइन उपलब्ध करा सकता था। दीया-बाती, फूलों की सजावट, मूर्तियों, सरसों के तेल, पटाखों से लेकर तमाम त्योहार में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के हमने नये-नये कृत्रिम विकल्प तलाश लिये हैं। विडंबना देखिए कि देवी-देवताओं की मूर्तियों से लेकर बिजली की झालरें तक चीन से आने लगी। लगाते रहें आप स्वदेशी का नारा, लोगों को फर्क नहीं पड़ता कि दोनों देशों में व्यापार संतुलन लगातार बिगड़ रहा है। पहले घरों में तरह-तरह के पकवान बनते थे ताकि परिवार व मित्रों को पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक मिठाई मिल सके। जबरदस्ती लक्ष्मी को घर बुलाने वाले लोगों की मिठाई की दुकानों में मिलावट व गुणवत्ता से समझौते करने की शिकायत पर प्रशासन की कार्रवाई की खबरें आ रही हैं। शहरी जीवन में दुधारू पशु बहुत कम दिखते हैं लेकिन दूध-पनीर-मावा जितना चाहे ले लो। मिठाइयों में कृत्रिम रंगों व चीनी की भरमार है, जिसके चलते भारत को मधुमेह की राजधानी कहा जाने लगा है। उजाले व मेल-मिलाप के इस त्योहार पर गिफ्ट संस्कृति की गहरी छाया नजर आती है। त्योहार नहीं लोगों के विभिन्न संकीर्ण लक्ष्य इसके जरिये साधे जाते हैं। प्रभावशाली अधिकारियों, मंत्रियों व नौकरशाहों को साधने का यह अचूक मंत्र बना हुआ है। वे भूल जाते हैं कि ये कुर्सी को सलाम है, पर्व का मर्म नहीं। रिश्ते नाते भी अब तो गिफ्ट के बोझ तले दबे नजर आते हैं।

भारत की मिसाइल शक्ति हुई और प्रखर, 800 किमी ब्रह्मोस से पाकिस्तान में मची हलचल

> ब्रह्मोस मिसाइल की 800 किमी मारक क्षमता का सबसे बड़ा सामरिक अर्थ पाकिस्तान के संदर्भ में उभरता है। पाकिस्तान की रणनीतिक गहराई सीमित है। उसके प्रमुख सैन्य ठिकाने, हवाई अड्डे, और रसद केंद्र सीमा से कुछ सौ किलोमीटर के दायरे में हैं।

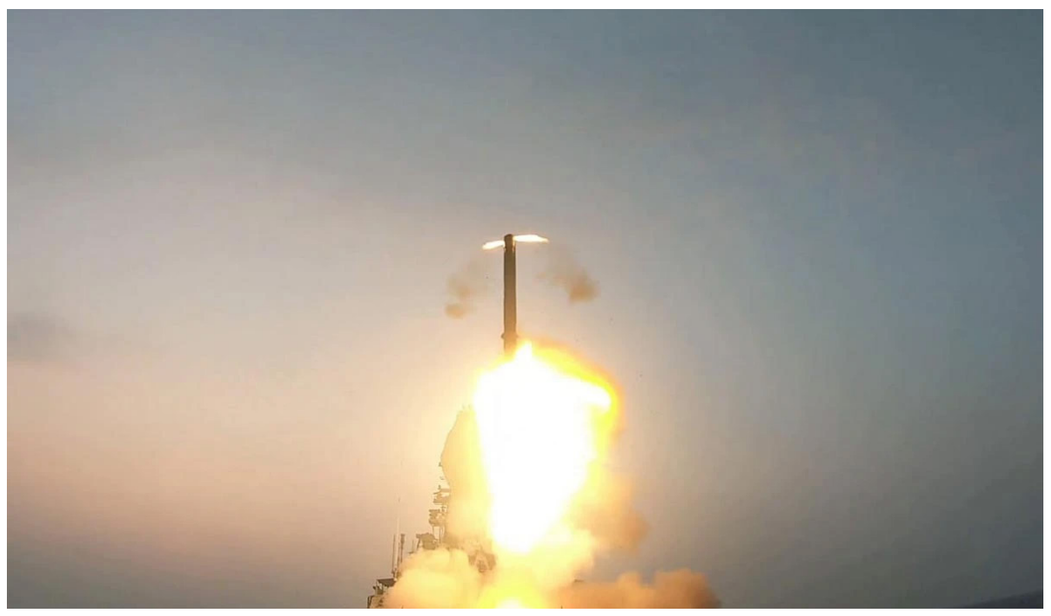

भारत ने अपनी सामरिक प्रहार क्षमता में एक और ऐतिहासिक छलांग लगाई है। देश अगले दो वर्षों में 800 किलोमीटर रेंज वाली नई ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइलों का इंडक्शन शुरू करेगा। यह मिसाइल मौजूदा 450 किमी संस्करण की तुलना में लगभग दोगुनी दूरी तय कर सकेगी और तीन गुना आवाज़ की गति से (मैक 2.8) प्रहार करने में सक्षम होगी। नौसेना और थलसेना इसे पहले चरण में अपनाएंगी, जबकि वायुसेना के लिए इसका एयर-लॉन्च संस्करण कुछ समय बाद तैयार होगा। इसके साथ ही, 200 किलोमीटर से अधिक रेंज वाली स्वदेशी ऑस्ट्रा मार्क-2 एयर-टू-एयर मिसाइलें भी 2026–27 तक उत्पादन के लिए तैयार होंगी। दोनों मिसाइलें न केवल भारत की "स्टैंड-ऑफ" स्ट्राइक क्षमता को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगी, बल्कि विदेशी हथियारों पर निर्भरता को भी कम करेंगी। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, यह कदम दक्षिण एशिया में सामरिक संतुलन को निर्णायक रूप से भारत के पक्ष में झुका देगा।देखा जाये तो भारत की नई 800 किमी रेंज वाली ब्रह्मोस मिसाइल केवल एक तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया के सामरिक परिदृश्य में शक्ति संतुलन की नई परिभाषा है। यह सिर्फ एक हथियार नहीं, बल्कि संदेश है कि भारत अब किसी भी शत्रु के ठिकाने को दूर से सटीकता से नेस्तनाबूद करने में सक्षम है और वह भी बिना परमाणु हथियारों के सहारे।

ब्रह्मोस का यह नया संस्करण, जो मौजूदा 450 किमी रेंज से लगभग दोगुना दूर तक प्रहार कर सकता है, भारतीय सैन्य सिद्धांत में "दूरस्थ और निर्णायक प्रतिशोध" की क्षमता को साकार करता है। चाहे समुद्र हो, भूमि या आकाश—यह सुपरसोनिक मिसाइल अपने लक्ष्य पर ऐसी गति से वार करती है कि प्रतिक्रिया का समय शून्य के बराबर रह जाता है। आज, जब अधिकांश राष्ट्र 'सटीक, सीमित और त्वरित युद्ध' की दिशा में जा रहे हैं, भारत का यह कदम उसकी सामरिक परिपक्वता का परिचायक है।

इस मिसाइल की 800 किमी मारक क्षमता का सबसे बड़ा सामरिक अर्थ पाकिस्तान के संदर्भ में उभरता है। पाकिस्तान की रणनीतिक गहराई सीमित है। उसके प्रमुख सैन्य ठिकाने, हवाई अड्डे, और रसद केंद्र सीमा से कुछ सौ किलोमीटर के दायरे में हैं। 800 किमी की ब्रह्मोस मिसाइल इन सभी पर बिना भारतीय विमानों को सीमा पार भेजे सीधे प्रहार करने में सक्षम होगी। यह 'स्टैंड-ऑफ स्ट्राइक' क्षमता भारत को वह सामरिक लाभ देती है जो पाकिस्तान के पास न तकनीकी रूप से है, न संसाधन के रूप में।

ऑपरेशन सिंदूर में जब भारतीय वायुसेना ने ब्रह्मोस मिसाइलों से सीमापार आतंक ठिकानों को ध्वस्त किया था, तब ही यह स्पष्ट हो गया था कि भारत अब अपने स्टाइल से प्रहार करेगा। 800 किमी ब्रह्मोस उस रणनीति को और भी प्रखर बना देगी। यदि कल को पाकिस्तान किसी भी तरह की उकसावेभरी हरकत करता है, तो भारत को अब किसी लंबी युद्ध-तैयारी या सीमित हवाई मिशन की जरूरत नहीं होगी, केवल आदेश देना होगा और परिणाम तय होगा।

दूसरी ओर, 200+ किमी की ऑस्ट्रा मार्क-2 मिसाइलें वायुसेना को निर्णायक आकाशीय बढ़त देंगी। अब भारत दुश्मन के फाइटर जेट्स को उनके राडार कवरेज में आने से पहले ही गिरा सकेगा। मई के हवाई अभियानों में पाकिस्तान द्वारा इस्तेमाल किए गए चीनी PL-15 मिसाइलों ने भारत के लिए यह चेतावनी दी थी कि वायुक्षेत्र में "रेंज का खेल" निर्णायक होता है। ऑस्ट्रा-2 और आने वाली ऑस्ट्रा-3 इस कमी को पूरी तरह समाप्त कर देंगी। इस सैन्य विकास का पाकिस्तान के लिए अर्थ स्पष्ट है—उसकी मौजूदा रक्षा-संरचना पुरानी पड़ चुकी है। न उसकी वायु रक्षा प्रणाली ब्रह्मोस जैसी सुपरसोनिक मिसाइल को रोक सकती है, न उसकी आर्थिक स्थिति नई तकनीकों की दौड़ में बने रहने की अनुमति देती है। यदि भारत अपनी 800 किमी ब्रह्मोस को नौसेना के जहाजों, थलसेना के मोबाइल लॉन्चर और वायुसेना के सुखोई जैसे प्लेटफॉर्म्स पर तैनात करता है, तो पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी बन जाएगी। यह मिसाइल भारत को केवल पश्चिमी मोर्चे पर ही नहीं, बल्कि पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में रणनीतिक गहराई देती है। चीन के संदर्भ में भी, यह क्षमता भारतीय नौसेना को मलक्का से अंडमान तक "सर्जिकल कंट्रोल" प्रदान करेगी। लेकिन पाकिस्तान के लिए खतरा तात्कालिक है— उसे अब न केवल अपनी सीमाओं पर सतर्क रहना होगा बल्कि अपने एयरबेस और कमांड सेंटरों को भी गहराई तक पुनर्गठित करना पड़ेगा। यह उसके सीमित संसाधनों पर भारी बोझ डालेगा।

भारत की रक्षा नीति अब "रिएक्टिव" नहीं, बल्कि "प्रो-एक्टिव डिटरेंस" की दिशा में आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की यह नीति स्पष्ट संकेत देती है कि भारत अब केवल जवाब नहीं देगा, बल्कि शर्तें तय करेगा। यह वही भारत है जो तकनीकी आत्मनिर्भरता के बल पर अपना सामरिक संतुलन खुद गढ़ रहा है— रूस, फ्रांस या इज़राइल की जगह अब DRDO और BrahMos Aerospace भारतीय रक्षा-शक्ति के असली प्रतीक बन गए हैं।

बहरहाल, यह कहा जा सकता है कि 800 किमी ब्रह्मोस भारत की "सामरिक शांति की मिसाइल" है— क्योंकि वास्तविक शांति वही सुनिश्चित कर सकता है जिसके पास निर्णायक शक्ति हो। पाकिस्तान को अब समझ लेना चाहिए कि उसकी "प्रॉक्सी वॉर" की कीमत अब पहले जैसी नहीं रहेगी। यदि उसने अपनी नीतियों में बदलाव नहीं किया, तो भविष्य में उसे केवल कूटनीतिक अलगाव ही नहीं, बल्कि सामरिक विनाश की वास्तविक संभावना का सामना करना पड़ सकता है। भारत ने अब यह स्पष्ट कर दिया है कि शांति की इच्छा हमारी नीति है, लेकिन शक्ति उसका संरक्षक है।

प्रेरणा

निःस्वार्थ पूजा : आत्मा की शांति का रहस्य

वन में पांडवों का जीवन संघर्षमय था। राजमहलों की शानो-शौकत छिन चुकी थी, सोने-चांदी के सिंहासन अब बीते हुए सपनों जैसे लगते थे। कभी हस्तिनापुर के सम्राट युधिष्ठिर, अब वन की मिट्टी पर आसन लगाकर साधना में लीन रहते थे। हवा में शाल वृक्षों की गंध घुली रहती, पक्षियों का मधुर कलरव गूंजता, और दूर कहीं बहती नदी की कलकल ध्वनि एक शांत संगीत की तरह वातावरण को पवित्र कर देती। कठिन परिस्थितियों के बावजूद, युधिष्ठिर का मन न तो क्रोध से भरा था, न ही विषाद से। वह हर सुबह स्नान कर सूर्य को अर्घ्य देते, अग्नि की पूजा करते और ध्यान में डूब जाते।

द्रौपदी उनके समीप बैठी रहतीं, कभी मौन, कभी प्रश्नों से भरी हुई। आज उनका मन व्याकुल था। भूख, अपमान और वनवास का बोझ उन पर भारी पड़ रहा था। उन्होंने देखा कि युधिष्ठिर पूजा समाप्त कर अपनी आंखें खोल रहे हैं, उनके चेहरे पर एक अद्भुत शांति थी, जैसे भीतर कोई तूफान भी उनके संतुलन को हिला न सके। द्रौपदी ने अचानक पूछा—

"महाराज, आप इतना पूजन-पाठ करते हैं, भगवान के सबसे प्रिय भक्त कहे जाते हैं। फिर भी हमारी यह दयनीय दशा क्यों है? क्यों नहीं भगवान हमारे कष्टों का अंत करते? क्या उन्होंने आपकी भक्ति को भुला दिया?"

युधिष्ठिर मुस्कुराए, उनकी आंखों में करुणा थी, पर उनमें कोई शिकायत नहीं। उन्होंने धीरे-धीरे कहा—

"प्रिय द्रौपदी, मैं परमात्मा का भजन किसी सौदे के लिए नहीं करता। पूजा मेरे लिए व्यापार नहीं, आत्मा की आवश्यकता है। जैसे सूरज बिना किसी स्वार्थ के प्रकाश देता है, जैसे फूल बिना किसी चाह के सुगंध बिखेरते हैं, वैसे ही मनुष्य को भी पूजा करनी चाहिए बिना किसी फल की आशा के।"

द्रौपदी ने विस्मय से पूछा—"पर क्या पूजा का उद्देश्य यही नहीं कि हम अपने दुख दूर कर सकें?"

युधिष्ठिर ने कहा—"नहीं, द्रौपदी। पूजा का अर्थ है अपने मन को निर्मल करना, अपने भीतर की अशांति को शांत करना। जब मैं भजन करता हूं, तो मुझे एक ऐसी शांति मिलती है जो किसी भी भौतिक सुख से बड़ी होती है। यह शांति ही मुझे संकटों का सामना करने की शक्ति देती है। जो भक्ति मांगने के लिए की जाती है, वह सौदेबाजी है। पर जो भक्ति केवल आनंद के लिए होती है, वही सच्ची भक्ति है। भगवान कोई व्यापारी नहीं हैं कि हम उन्हें मंत्रों और आहुतियों के बदले वरदानों की सूची दें। वे तो हमारे हृदय के भाव देखते हैं, हमारी श्रद्धा की गहराई को परखते हैं।"

वन की हवा में मौन छा गया। कुछ क्षणों तक दोनों मौन बैठे रहे। युधिष्ठिर की बातें द्रौपदी के हृदय में उतरने लगीं। उन्होंने महसूस किया कि जो व्यक्ति संसार के सुख-दुख से परे है, वही सच्चा भक्त है। जो ईश्वर से केवल प्रेम करता है, बिना किसी चाह के, वही ईश्वर का वास्तविक प्रिय होता है।

संध्या का समय था। आकाश लालिमा से भर गया। युधिष्ठिर ने अग्नि में समिधा डाली और प्रार्थना की—"हे प्रभो, हमें वह बुद्धि दो जिससे हम सत्य के मार्ग पर चल सकें, और वह धैर्य दो जिससे हम विपत्तियों में भी तुम्हारे नाम का स्मरण कर सकें।"

द्रौपदी ने देखा कि युधिष्ठिर के चेहरे पर एक दिव्य आभा है। उस क्षण उन्होंने समझ लिया कि सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि उस आंतरिक शांति में है जो भक्ति से मिलती है। जो व्यक्ति अपने हृदय को ईश्वर के चरणों में रख देता है, उसके पास कोई दुःख नहीं रह जाता।

रात उतर आई थी। दूर कहीं झींगुरों की ध्वनि गूंज रही थी। युधिष्ठिर मौन ध्यान में बैठे थे, और द्रौपदी की आंखों से आंसू बह रहे थे—पर वे दुख के नहीं, श्रद्धा के थे। उन्होंने मन ही मन कहा—"हे केशव, आज मैंने समझा कि निःस्वार्थ पूजा क्या होती है। भक्ति का अर्थ मांगना नहीं, बस प्रेम से झुक जाना है।"

उस रात का मौन वन के पेड़ों में, हवा में और द्रौपदी के हृदय में बस गया। अब वह जान चुकी थीं कि ईश्वर के निकट जाने का मार्ग किसी याचना से नहीं, बल्कि पूर्ण समर्पण से खुलता है। कथा यही सिखाती है—जब तक मनुष्य ईश्वर से कुछ पाने की इच्छा रखता है, तब तक उसकी भक्ति अधूरी है। सच्ची भक्ति वही है जो कहे—

"हे प्रभो, मुझे कुछ मत दो, बस मुझे तुम्हारा बना रहने दो।"

अस्थिरता पैदा करने वाला ट्रंप प्रशासन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के अप्रत्याशित फैसलों से आए दिन दुनिया भर में कोई नई हलचल देखने को मिल रही है। इस हलचल के कुछ सूत्र कहीं न कहीं अमेरिकी नौकरशाही से भी जुड़े हैं। अमेरिका, मेक्सिको और ब्राजील जैसे देशों में स्पोइल्स सिस्टम प्रणाली लागू है। शासन-प्रशासन संबंधी हलकों में इसे 'लूट आधारित पद वितरण प्रणाली' भी कहा जाता है।

इससे यही आशय है कि जब कोई पार्टी या नेता सत्ता में आता है तो उनके समर्थकों, कार्यकर्ताओं और वफादार लोगों को सरकारी पदों, नौकरियों और नियुक्तियों में प्राथमिकता मिलती है। इसमें योग्यता पर राजनीतिक निष्ठा को वरीयता दी जाती है। इसके विपरीत भारत, जर्मनी, जापान, कनाडा देशों में स्थायी सिविल सेवा की व्यवस्था है, जो नीतिगत निरंतरता को सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होती है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्पोइल्स सिस्टम को संस्थागत स्वरूप देने वाला अमेरिका पहला देश था।

वर्ष 1829–1837 के बीच राष्ट्रपति एंड्रयू जैक्सन ने इसे आगे बढ़ाया। जैक्सन और उनके समर्थकों की दलील थी कि सरकारी पद किसी एक स्थायी वर्ग के एकाधिकार में नहीं होने चाहिए और उनमें बदलाव होते रहने चाहिए। ऐसी व्यवस्था ने अक्षमता, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अस्थिरता को बढ़ावा दिया तो उसमें सुधार की मांग भी उठती रही।

वर्ष 1881 में राष्ट्रपति जेम्स ए. गारफील्ड की हत्या ने अमेरिकी संसद को पेंडलटन सिविल सेवा सुधार अधिनियम पारित करने के लिए प्रेरित किया। इसके लागू होने से कई संघीय पदों के लिए प्रतियोगी परीक्षाएं, कार्यकाल की सुरक्षा और मेरिट-आधारित भर्तियों की व्यवस्था हुई।

हालांकि कुछ लिपिकीय एवं तकनीकी नौकरियां ही इस योग्यता आधारित प्रणाली के दायरे में आ सकीं, जबकि वरिष्ठ पद राजनीतिक अनुकंपा के अधीन ही रहे। आज भी विदेश, रक्षा, न्याय, घरेलू सुरक्षा, वित्त और कई नियामकीय एजेंसियों में शीर्ष पदों पर राजनीतिक नियुक्तियां ही होती हैं। कैबिनेट सचिव से लेकर राजदूत तक करीब 4,000 अहम पदों पर नियुक्ति राष्ट्रपति ही निर्धारित करते हैं।

ट्रंप के अप्रत्याशित फैसलों के आलोक में इस व्यवस्था की कार्यप्रणाली को समझा जा सकता है। पिछले महीने ट्रंप ने एकाएक एच1बी वीजा से जुड़े नियम बदल दिए। सामान्य तौर पर ऐसे फैसले एक स्थापित प्रक्रिया और व्यापक विचार-विमर्श के बाद लिए जाते हैं। इसमें विभिन्न पक्षों के बीच परामर्श, कानूनी समीक्षा और संबंधित विभागों के साथ समन्वय जैसे पहलू जुड़े होते हैं। ट्रंप के उक्त फैसले से प्रतीत हुआ कि इसमें अपेक्षित प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया। इससे भ्रम और अफरातफरी का ऐसा माहौल बना कि माइक्रोसाफ्ट और एमेजोन जैसी दिग्गज कंपनियों को आननफानन अपने एच1बी वीजाधारकों को अमेरिका से बाहर जाने से बचने या जल्द से जल्द अमेरिका लौटने संबंधी निर्देश जारी करना पड़ा। सरकारी अधिकारियों की विरोधाभासी बयानबाजी ने स्थिति को और उलझा दिया।

जैसे वाणिज्य मंत्री हावर्ड लुटनिक ने बताया कि यह शुल्क हर साल लिया जाएगा, जिस पर व्हाइट हाउस ने बाद में स्पष्टीकरण जारी किया कि केवल नए आवेदकों से लिया जाना वाला यह शुल्क एक बार लिया जाएगा। स्पष्ट है इसमें मानक प्रक्रियाएं नहीं अपनाई गईं।

चूंकि स्पोइल्स प्रणाली के अंतर्गत होने वाली नियुक्तियां राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत ही प्रभावी रहती हैं, इसलिए उनके भीतर ब्लैक स्वान यानी अप्रत्याशित निर्णयों का समर्थन करने की प्रवृत्ति भी अधिक देखने को मिलती है, ताकि हर प्रकार की स्थिति में अधिकारी अपने पद पर बने रह सकें। स्पष्ट है कि यह प्रणाली एकाएक लिए जाने वाले निर्णयों और त्वरित नीतिगत परिवर्तनों को संरक्षण प्रदान करती है। इसके विपरीत विशुद्ध योग्यता आधारित या स्थायी नौकरशाही में पेशेवर प्रशासक नीतिगत निरंतरता के साथ ही राजनीतिक परिदृश्य के स्तर पर भी स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। स्पोइल्स प्रणाली के और भी नुकसान हैं।

पदाधिकारी दीर्घकालिक हित के बजाय अपने अल्पकालिक हित या स्वार्थों को पोषित करने की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं। हालांकि इस प्रणाली का एक लाभ यह है कि इसमें दबाव वाले मुद्दों पर निर्णायक फैसलों की गुंजाइश मिलती है और इसमें लालफीताशाही के चलते होने वाली देरी की आशंका घट जाती है, लेकिन मेक्सिको, फिलीपींस और इंडोनेशिया आदि में किए गए शोध यही संकेत करते हैं कि ऐसी प्रणालियों में भाई-भतीजावाद, पक्षपात और सार्वजनिक धन-संसाधनों के दुरुपयोग की आशंका कहीं अधिक बढ़ जाती है। इसके विपरीत, मानक भर्ती और जवाबदेही तंत्र के साथ योग्यता-आधारित प्रणालियां उक्त जोखिमों को कम करती हैं। संभवतः यही कारण रहा होगा कि भारत के राष्ट्र निर्माताओं ने ऐसी योग्यता आधारित सिविल सेवा के महत्व को पहचाना, जो पूर्वाग्रह एवं पक्षपात से मुक्त हो।

उन्होंने संविधान में इसकी तटस्थता को स्थापित किया। सार्वजनिक सेवा आयोगों को एक निष्पक्ष और पेशेवर नौकरशाही के अग्रदूत के रूप में स्थापित किया और सुनियोजित रूप से इसे राजनीतिक हस्तक्षेप से सुरक्षित रखा। ऐसा नहीं है कि मेरिट आधारित नौकरशाही प्रणाली प्रत्याशित फैसलों को लेकर पूरी तरह से मुक्त है, लेकिन इसमें ऐसे झटकों की आशंका अपेक्षाकृत कम होती है। स्पोइल्स प्रणाली के उलट इसमें संस्थागत मानकों, विशेषज्ञता और प्रक्रियात्मक विधि का कड़ाई से पालन होता है।

इस संदर्भ में भारत को भाग्यशाली कहा जा सकता है कि यहां एक पेशेवर एवं स्थायी सिविल सेवा प्रणाली लागू है। हालांकि कोई भी प्रणाली अपने आप में पूर्ण या त्रुटिरहित नहीं, लेकिन अंतर्निहित निगरानी एवं नियंत्रण के साथ ही निरंतरता का भाव इसे इस रूप में बेहतर बनाता है कि यह उन व्यवधानों से बचाने में उपयोगी है, जिनकी कई बार देश को दूरगामी कीमत चुकानी पड़ती है।

अभियान

भाई दूज : स्नेह, श्रद्धा और सुरक्षा का पावन पर्व

दीपावली का उल्लास जब अपने शिखर पर होता है, तब उसके समापन का अंतिम और अत्यंत मधुर अध्याय होता है — भाई दूज। इस दिन का नाम लेते ही आँखों के सामने बहन का स्नेहिल चेहरा और भाई का स्नेहभरा आशीर्वाद झिलमिला उठता है। भाई दूज केवल एक पर्व नहीं, बल्कि रक्त और आत्मा के उस अटूट बंधन का उत्सव है जो जन्म-जन्मांतरों तक चलता है। इसकी कथा में प्रेम, करुणा, त्याग और धर्म का गूढ़ संदेश छिपा है।

बहुत प्राचीन काल में सूर्यदेव और उनकी पत्नी छाया के दो संतान हुए — यमराज और यमुना। यमराज मृत्युलोक के स्वामी बने और यमुना देवी दिव्य नदी के रूप में पृथ्वी पर प्रवाहित हुईं। दोनों भाई-बहन बचपन में एक-दूसरे से बहुत स्नेह करते थे, पर जब यमराज को अपने कार्य हेतु पृथ्वी लोक पर भेजा गया, और यमुना नदी के रूप में लोक कल्याण के लिए बहने लगीं, तो समय के प्रवाह ने उनके बीच दूरी ला दी।

कई युग बीत गए। यमुना देवी का मन अपने भाई को देखने के लिए व्याकुल हो उठा। वे प्रतिदिन अपने हृदय में प्रार्थना करतीं — "हे प्रभो, आज मेरा यम भाई मेरे घर आए।" वे अपने जल में कमल

फूल सजातीं, स्वर्ण पात्रों में व्यंजन बनवातीं, सुगंधित पुष्पों से द्वार सजातीं और प्रतीक्षा करतीं कि शायद आज यम आएंगे। परंतु यमराज अपने कर्म में इतने व्यस्त रहते कि वे बहन से मिलने नहीं आ सके।

एक दिन यमराज ने अपनी दूतों से पूछा — "आज किसका प्राण हरना है?" दूतों ने कहा — "हे धर्मराज, आज कोई ऐसा नहीं है जिसका जीवनकाल समाप्त हुआ हो।" यह सुनकर यमराज को स्मरण हुआ कि बहुत समय से वे अपनी बहन यमुना से नहीं मिले हैं। उनका हृदय प्रेम से भर उठा और उन्होंने सोचा, "आज मैं किसी का प्राण नहीं लूंगा, आज मैं अपनी बहन के घर जाऊँगा।"

यमुना उस दिन भी अपने घर को सजा रही थीं। उन्हें आभास हुआ कि आज कुछ शुभ होने वाला है। तभी उन्होंने देखा कि द्वार पर यमराज खड़े हैं, स्वर्णमय तेज से दीप्त। यमुना के नेत्रों में आँसू आ गए। उन्होंने दौड़कर अपने भाई के चरणों में सिर झुका दिया। यमराज ने स्नेहपूर्वक बहन को उठाया और कहा, "बहन, मैं तुम्हारे स्नेह का ऋणी हूँ। आज मैं तेरे घर अतिथि बनकर आया हूँ।"

यमुना ने अपने भाई का स्वागत किया, उन्हें स्नान कराया, पवित्र आसन पर बिठाया, दिव्य व्यंजन परोसे। उन्होंने तिलक किया, दीप जलाकर आरती उतारी और प्रार्थना की — "भैया, तुम चिरंजीवी रहो। तुम्हारे दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया।" यमराज अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले — "बहन, आज मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। जो भी आज के दिन अपनी बहन से तिलक करवाएगा, भोजन करेगा और उसकी आरती स्वीकार करेगा, उसके घर कभी अकाल मृत्यु नहीं आएगी।"

उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि थी — और तभी से यह दिवस "भाई दूज" के नाम से जाना गया। उस क्षण यमुना ने अपने दिव्य स्वरूप में यमराज को स्नान कराया, और उनके चरणों का जल जब धरती पर गिरा, तो वह जल यमुनाजी के पवित्र तटों पर अमृत बन गया। इसीलिए कहा गया कि जो व्यक्ति भाई दूज के दिन यमुना में स्नान करता है, वह यमराज के भय से मुक्त हो जाता है।

यमराज ने बहन से विदा लेते समय कहा — "बहन, आज का दिन सदा तुम्हारे नाम से जुड़ा रहेगा। जब भी कोई बहन अपने भाई का तिलक करेगी, मैं स्वयं उस घर की रक्षा करूंगा।"

तभी से यह परंपरा चल पड़ी कि भाई दूज के दिन बहनें अपने भाई को तिलक लगाकर उसकी दीर्घायु और सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। भाई भी बहन की रक्षा का वचन देता है और उसे उपहार देकर अपने प्रेम का प्रतीक प्रस्तुत करता है।

इस पवित्र कथा के माध्यम से हमारे ऋषियों ने हमें यह सिखाया कि भाई-बहन का संबंध केवल रक्त का नहीं, बल्कि कर्तव्य, स्नेह और आत्मिक बंधन का प्रतीक है। यमराज, जो मृत्यु के देवता हैं, उन्होंने भी उस दिन अपनी बहन के स्नेह के आगे अपने कठोर नियमों को विराम दे दिया — यह दर्शाता है कि प्रेम सबसे बड़ा धर्म है, जो स्वयं मृत्यु को भी रोक सकता है।

आज भी जब बहनें भाई के माथे पर तिलक लगाती हैं और कहती हैं — "भैया, तुम सदा सुखी रहो," तो यह केवल शब्द नहीं, बल्कि वह दिव्य आशीर्वाद होता है जो यमुना ने अपने भाई यमराज को दिया था। उसी क्षण हर घर में उस प्राचीन कथा की पवित्र गूंज सुनाई देती है, और ऐसा लगता है मानो यमराज स्वयं आकर कह रहे हों —

"जहाँ बहन का स्नेह और भाई का आदर है, वहाँ मृत्यु भी मुस्कुराकर लौट जाती है।"

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

त्योहारी सीजन में भारतीय रेलवे की बेमिसाल तैयारी, 1 करोड़ से अधिक यात्रियों ने किया सफर

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दीपावली और छठ जैसे प्रमुख त्यौहारों के दौरान देशभर में यात्रियों की आवाजाही बढ़ जाती है, और इस चुनौती का सामना करने के लिए भारतीय रेलवे ने इस बार अभूतपूर्व तैयारियां की हैं। केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने रेलवे बोर्ड के वॉर रूम का दौरा कर त्योहारी सीजन के दौरान चल रही व्यवस्थाओं और यात्री सुविधाओं की समीक्षा की। उन्होंने चौबीसों घंटे समर्पित भाव से कार्य कर रहे रेलवे कर्मचारियों की सराहना की और उन्हें दीपावली की शुभकामनाएं भी दीं। भारतीय रेलवे ने इस बार यात्रियों की बढ़ती यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए कुल 12,011 विशेष रेलगाड़ियों का संचालन किया है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में चलाई गई 7,724 ट्रेनों की तुलना में 4,287 अधिक हैं। इससे यह साफ़ दिखता है कि रेलवे ने इस बार यात्रियों के लिए हर संभव सुविधा सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है। 1 से 19 अक्टूबर 2025 के बीच चलाई गई 3,960 विशेष ट्रेनों ने देशभर में यात्रियों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित की। इन विशेष सेवाओं के जरिए अब तक 1 करोड़ से अधिक यात्रियों को सुगम और सुरक्षित यात्रा का अवसर मिला है।

रेलवे ने सिर्फ अतिरिक्त ट्रेनों के संचालन तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि स्टेशनों पर भी यात्रियों की सुविधा के लिए व्यापक प्रबंध किए। यात्रियों के लिए विशेष होल्डिंग एरिया बनाए गए, अतिरिक्त टिकट काउंटर खोले गए, पेयजल और स्वच्छ शौचालय की सुविधा सुनिश्चित की गई, और भीड़ प्रबंधन को प्रभावी ढंग से लागू किया गया। नई दिल्ली क्षेत्र के अंतर्गत नई दिल्ली, दिल्ली, आनंद विहार, हजरत निजामुद्दीन और शकूरबस्ती स्टेशन से 16 से 19 अक्टूबर के बीच कुल 15.17 लाख यात्रियों ने सफर किया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 13.66 लाख यात्रियों की तुलना में 1.51 लाख अधिक है।

भारतीय रेलवे ने आने वाले दिनों में लगभग 8,000 और अतिरिक्त विशेष रेलगाड़ियों का संचालन करने की योजना बनाई है, ताकि त्योहारी सीजन में यात्रियों को समय पर, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा अनुभव प्राप्त हो सके। उत्तर रेलवे, मध्य रेलवे और पश्चिमी रेलवे विशेष रेलगाड़ियों के संचालन में सबसे आगे हैं, जबकि पूर्व मध्य रेलवे और उत्तर पश्चिम रेलवे सहित अन्य जोन भी क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त सेवाओं में जुटे हैं।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली और आनंद विहार रेलवे स्टेशनों का दौरा कर यात्रियों से सीधे बातचीत की और रेलवे द्वारा किए गए प्रबंधों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय रेलवे सभी यात्रियों को सुरक्षित और सुखद यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। कुशल संचालन और यात्रियों की सुविधा के लिए 12 लाख से अधिक रेलवे कर्मचारी चौबीसों घंटे समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं।

इस त्योहारी सीजन में भारतीय रेलवे की ये पहल न केवल यात्रियों के लिए सुविधा और सुरक्षा का संदेश देती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि रेलवे देशभर में लोगों के जीवन को जोड़ने और त्योहारी खुशी को बढ़ाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सीमा पर दीपावली की अलग ही चमक: BSF जवानों ने देशभक्ति और उत्साह के संग मनाया त्योहार

(जीएनएस)। देशभर में दीपावली के दीयों की रौशनी घर-घर में फैली थी, वहीं भारत-पाक सीमा पर भी त्योहार का जज़्बा कम नहीं था। सीमा सुरक्षा बल (BSF) के जवानों ने अपने घरों से हजारों किलोमीटर दूर, कर्तव्य की चौकियों पर ही दीपावली मनाई। यह जश्न परिवारों से दूर था, लेकिन इसमें देशभक्ति और भाईचारे की गहराई झलक रही थी।

पंजाब के गुरदासपुर सेक्टर में BSF जवानों ने सीमा चौकियों को दीपों की रौशनी से सजाया। इस अवसर पर BSF के महानिरीक्षक (IG) अतुल फुलजले मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ डीआईजी और बटालियन कमांडेंट जसविंदर कुमार विरदी ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। जवानों ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलन किया और राष्ट्रभक्ति गीतों से माहौल को देशप्रेम की भावना में रंगा। दीप जलाने के बाद जवानों में मिठाइयां बांटी गईं और सीमांत चौकियों पर आतिशबाज़ी के रंगीन नज़ारे आसमान में चमक उठे। इसके बाद जवानों ने एक छोटा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें देशभक्ति गीतों और लोकनृत्यों के माध्यम से त्योहार की उमंग साझा की गई। रात्रि भोज में जवानों ने साथ बैठकर भोजन किया, जैसे एक परिवार जो देश की सरहदों की रक्षा में हमेशा तत्पर रहता है।

मुख्य अतिथि अतुल फुलजले ने जवानों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा, "आपका परिवार भले दूर हो, लेकिन देश की हर सांस और हर नागरिक आपके साथ है। दीपावली का असली अर्थ अंधकार पर प्रकाश की विजय है, और आप रोज़ यह विजय सीमा पर अर्जित करते हैं।" उन्होंने जवानों की कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन की सराहना करते हुए कहा कि त्योहारों के बीच उनका उत्साह देश के हर नागरिक के लिए प्रेरणा है।

इस अवसर ने BSF पंजाब के अधिकारियों और जवानों में उच्च मनोबल और उत्सवी भावना का संचार किया। सरहद पर सजे दीप केवल रौशनी नहीं थे, बल्कि उन दिलों का प्रतीक थे जो चौबीसों घंटे देश की सुरक्षा में लगे रहते हैं। भारत-पाक सीमा पर यह दीपावली इस बात का संदेश भी बनी कि जहाँ कर्तव्य है, वहीं असली उत्सव है। इन दीपों ने एक बार फिर साबित किया कि जब देश के प्रहरी सतर्क रहते हैं, तभी पूरा देश चैन की नींद सो पाता है।

दिवाली पर शेयर बाजार में तेजी, Sensex 700 अंक ऊपर और रुपया एक महीने के उच्च स्तर पर

(जीएनएस)। दिवाली के अवसर पर भारतीय शेयर बाजार ने शानदार शुरुआत की। सोमवार को शुरुआती कारोबार में बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 704.37 अंक की तेज बढ़त के साथ 84,656.56 के स्तर पर खुला, जबकि एनएसई का 50 शेयरों वाला निफ्टी 216.35 अंक ऊपर 25,926.20 पर पहुंचा। इस तेजी का मुख्य कारण रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, एक्सिस बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, इंफोसिस और बजाज फिनसर्व जैसे बड़े शेयरों में मजबूती और विदेशी निवेशकों की लिवाली रही।

विदेशी संस्थागत निवेशकों (FII) ने शुक्रवार को 308.98 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे, जिससे घरेलू बाजार में सकारात्मक धारणा बनी। वैश्विक बाजारों में भी जोरदार तेजी से भारतीय शेयर बाजार को समर्थन मिला। इसी दौरान वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.36 प्रतिशत गिरकर 61.07 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया, जिससे कच्चे तेल की कम कीमतों का असर रुपया मजबूत होने में भी देखने को मिला।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 14 पैसे मजबूत होकर 87.88 के एक महीने के उच्च स्तर पर पहुंच गया। प्रारंभिक कारोबार में रुपये ने 87.95 के निचले स्तर और 87.88 के ऊपरी स्तर को छुआ। इससे पहले शुक्रवार को रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 88.02 पर बंद हुआ था।

वहीं, डॉलर सूचकांक, जो छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाता है, 0.02 प्रतिशत बढ़कर 98.45 पर पहुंच गया। ब्रेंट क्रूड वायदा कारोबार में 0.31 प्रतिशत गिरकर 61.10 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। इस पूरी स्थिति ने निवेशकों में उत्साह पैदा किया और दिवाली पर शेयर बाजार में तेजी का जश्न मनाया गया।

विशेषज्ञों का कहना है कि विदेशी निवेशकों की लिवाली, कच्चे तेल की कम कीमत और वैश्विक बाजारों में मजबूती के कारण भारतीय शेयर बाजार ने दिवाली पर मजबूत शुरुआत की है। निवेशक अब आगामी कारोबारी सत्रों में बाजार की दिशा और कंपनियों के प्रदर्शन पर नजर बनाए हुए हैं।

पुरानी दिल्ली की मिठाई की दुकान में राहुल गांधी को मिली शादी की 'सलाह', दीपावली पर मिठाई बनाते हुए बनी यादगार मुलाकात

नई दिल्ली। दीपावली के मौके पर पुरानी दिल्ली की ऐतिहासिक मिठाई दुकान में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की मुलाकात कुछ खास अंदाज में हुई। घंटेवाला मिठाई की दुकान पर पहुंचे राहुल गांधी ने न केवल मिठाइयों की खुशबू का आनंद लिया, बल्कि खुद हाथ आज़माकर इमरती और बेसन के लड्डू बनाने में भी अपना हुनर दिखाया। इस दौरान दुकान के मालिक ने उन्हें अनोखी और मजेदार सलाह दे डाली, जो वहां मौजूद लोगों के चेहरे पर मुस्कान बिखेर गई।

दुकानदार ने राहुल गांधी से कहा कि उनकी दुकान ने आपके परिवार की कई पीढ़ियों को मिठास से सराबोर किया है। "हमने आपके नाना (जवाहरलाल नेहरू), दादी (इंदिरा गांधी), पापा (राजीव गांधी) और दीदी (प्रियंका गांधी) को मिठाई दी है। बस अब एक चीज़ का इंतजार है, आपसे गुजारिश है कि जल्दी शादी करिए। आपकी शादी का इंतजार है। सबसे पहले आप शादी कीजिए और उसकी मिठाई भी आप हमसे लीजिए। हम उसका इंतजार कर रहे हैं।"

राहुल गांधी ने दुकानदार की इस प्यारी और हल्की-फुल्की सलाह पर मुस्कराकर जवाब दिया, लेकिन कुछ नहीं कहा। इस मुलाकात का वीडियो राहुल गांधी ने अपने यूट्यूब चैनल पर साझा किया, जिसमें उनकी सहज मुस्कान और मिठाई बनाने के प्रयास को देखा जा सकता है।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने वीडियो साझा करते हुए कहा कि पुराने दिल्ली की इस प्रतिष्ठित घंटेवाला मिठाई की दुकान की मिठास सदियों से खालिस, पारंपरिक और दिल को छू लेने वाली रही है। राहुल गांधी ने इस अवसर पर कहा कि दीपावली की असली मिठास सिर्फ थाली में नहीं, बल्कि रिश्तों, परिवार और समाज में भी बसी होती है। उन्होंने अपने प्रशंसकों से यह भी पूछा कि वे अपनी दिवाली कैसे मना रहे हैं और इसे खास बनाने के लिए क्या कर रहे हैं।

इस तरह पुरानी दिल्ली की मिठाई की दुकान में राहुल गांधी की यह मुलाकात न केवल दीपावली की खुशियों में मिठास जोड़ने वाली रही, बल्कि जनता के बीच उनके सहज और मानवतावादी अंदाज की झलक भी पेश की।

देश और दुनिया में दीपों का त्योहार दीवाली की खुशियों ने जगाया उजाला

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत में दीपों और खुशियों का त्योहार दीवाली पूरे उत्साह और धूमधाम के साथ मनाया गया। शहर-गाँव हर ओर जगमगाते दीप, रंग-बिरंगी रोशनी और पटाखों की चमक से वातावरण पर्वत की तरह रोशन हो गया। लोग एक-दूसरे को मिठाइयां बाँटते और शुभकामनाएं देते नजर आए। बाजारों में रौनक, मंदिरों में भव्य पूजा, घरों में साफ-सफाई और सजावट का माहौल देख कर यह साफ दिखा कि दीवाली केवल एक त्योहार नहीं बल्कि सामाजिक एकता और पारिवारिक बंधनों का प्रतीक भी है।

देश भर में लोग सुबह से ही पूजा और खरीदारी में व्यस्त रहे। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरु समेत सभी बड़े शहरों में लोग अपने घरों और व्यवसायिक प्रतिष्ठानों को दीपों और रंगोली से सजाने में जुटे रहे। कई परिवारों ने अपने घरों के आंगन और बालकनी को दीपों और लाइट्स से सजाया, तो कुछ लोग मंदिरों में जाकर माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा कर धन, समृद्धि और सुख-शांति की कामना की। ग्रामीण इलाकों में भी त्योहार की रौनक देखने को मिली। खेतों और गलियों में लोग दीप जलाकर एक-दूसरे को बधाई देने पहुंचे।

दिवाली का यह उत्सव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय ने भी यह त्योहार बड़े उत्साह के साथ मनाया। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर और यूरोप के कई देशों में भारतीय दूतावासों और समुदायों ने दीवाली उत्सव आयोजित किया। दुनिया के नेताओं ने भी अपने संदेशों के माध्यम से भारतीय जनता को शुभकामनाएं दीं।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप ने दीवाली पर संदेश जारी करते हुए सभी अमेरिकी नागरिकों को शुभकामनाएं दी और कहा कि यह त्यौहार आशा, शांति और प्रकाश का संदेश देता है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने भी दीवाली पर अपने संदेश में कहा कि यह त्योहार जीवन में सफलता और खुशियों का संचार करे। यूएई के शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम ने अपनी शुभकामनाओं में दीवाली को शांति, सुरक्षा और समृद्धि से जोड़ते हुए सभी भारतीय समुदायों को बधाई दी।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत की जनता को दीवाली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह त्योहार भारत और इजरायल के बीच दोस्ती, सहयोग और उज्जवल भविष्य का प्रतीक है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने ब्रिटेन में रहने वाले सभी हिंदू, जैन और सिख समुदाय को दीवाली और बंदी छोड़ दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसा ब्रिटेन बनाएं जहां हर कोई आशा और खुशियों के साथ आगे देख सके।

दुनिया भर में इस त्योहार ने न केवल भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ाया, बल्कि विभिन्न देशों के बीच आपसी सौहार्द और एकता को भी उजागर किया। दीवाली का यह उत्सव यह साबित करता है कि चाहे दूरी कितनी भी हो, खुशियों और रोशनी का संदेश हर जगह पहुंचाया जा सकता है। हर दीपक और हर आतिशबाजी के साथ लोग एक-दूसरे के जीवन में सुख, समृद्धि और शांति की कामना कर रहे थे। इस तरह, भारत और विदेशों में दीवाली का यह पर्व न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मानवता, भाईचारे और वैश्विक सद्भावना का प्रतीक भी बन गया है।

ब्रजघाट व पुष्पावती पूठ में श्रद्धालुओं का मेला, गंगा में आस्था की डुबकी से गूंजा हर-हर गंगे

(जीएनएस)। ब्रजघाट। ब्रजघाट और पुष्पावती पूठ की पवित्र घाटियों में सोमवार को श्रद्धालुओं का भारी जमावड़ा देखने को मिला। गंगा स्नान के लिए आए श्रद्धालुओं ने हर-हर गंगे के जयकारों से घाट और आसपास का क्षेत्र गुंजायमान कर दिया। अधिकारियों के अनुसार, दोनों तीर्थ स्थलों पर दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र गंगा में आस्था की डुबकी लगाकर पुण्य कमाया।

श्रद्धालुओं ने न केवल अपने लिए, बल्कि अपने पितरों के कल्याण के लिए भी धार्मिक अनुष्ठान किए। घाट पर गंगा स्नान के बाद कई भक्तों ने श्रीसत्यनारायण भगवान की कथा का श्रवण किया, वहीं मंदिरों में चल रहे भजन-कीर्तन में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। अनेक लोगों ने विधि-विधान के अनुसार पूजा अर्चना की और गरीब एवं असहाय लोगों को अन्न, वस्त्र, धन आदि का दान कर पुण्य अर्जित किया। इस अवसर पर प्रशासन और पुलिस भी पूरी सतर्कता के साथ मौजूद रहे। गहरे पानी में जाने से रोकने के लिए घाटों पर लगातार निगरानी रखी गई। हाईवे पर जाम न लगे, इसके लिए पुलिस बल तैनात रहे और भीड़-प्रबंध पर विशेष ध्यान दिया गया।

ब्रजघाट और पुष्पावती पूठ में श्रद्धालुओं का यह मेला न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि यह क्षेत्रीय प्रशासन की सुव्यवस्थित व्यवस्था और सुरक्षा के कुशल प्रबंधन का भी परिचायक बना। पूरे दिन गंगा तट पर आस्था, भक्ति और आनंद का वातावरण बना रहा, और श्रद्धालुओं ने इस पवित्र पर्व का भरपूर आनंद लिया।

डकैती के मामले में बर्खास्त सब-इंस्पेक्टर रंजीत कासले गिरफ्तार, गुजरात पुलिस ने लातूर से दबोचा

(जीएनएस)। मुंबई। महाराष्ट्र पुलिस से बर्खास्त सब-इंस्पेक्टर रंजीत कासले एक बार फिर विवादों में आ गया है। गुजरात पुलिस ने सूरत में दर्ज एक डकैती के मामले में कासले को महाराष्ट्र के लातूर जिले से गिरफ्तार किया है। अधिकारियों के अनुसार, रविवार देर रात करीब 10:30 बजे गुजरात पुलिस की एक विशेष टीम ने स्थानीय पुलिस की मदद से यह कार्रवाई की। यह गिरफ्तारी ऐसे समय में हुई है जब कासले पहले ही कई विवादित मामलों में घिरा हुआ था, जिनमें बीड सरपंच हत्याकांड से जुड़े कथित "सुपारी कनेक्शन" का दावा भी शामिल है।

मिली जानकारी के अनुसार, सूरत के पास पाल पुलिस स्टेशन में दर्ज डकैती के एक मामले में कासले का नाम सामने आया था। इस केस में पहले से गिरफ्तार कुछ संदिग्धों ने पूछताछ के दौरान खुलासा किया था कि कासले ने लुटेरों के गिरोह को रसद और अन्य सहायता उपलब्ध कराई थी। इन बयानों के आधार पर गुजरात पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की और पिछले कई दिनों से लातूर में निगरानी रखी जा रही थी। रविवार रात जब कासले की मौजूदगी की पुष्टि हुई, तो टीम ने तत्काल दबिश डालकर उसे गिरफ्तार कर लिया।

लातूर अपराध शाखा के निरीक्षक सुधाकर बावकर ने बताया कि गुजरात पुलिस ने स्थानीय पुलिस से समन्वय कर यह कार्रवाई की। कासले को सोमवार को सूरत ले जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है, जहाँ उससे विस्तृत पूछताछ की जाएगी।

गौरतलब है कि रंजीत कासले को इस साल की शुरुआत में महाराष्ट्र पुलिस से बर्खास्त कर दिया गया था। बर्खास्तगी से पहले वह कई विवादों में फँसा हुआ था। अप्रैल में बीड पुलिस ने उसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया था, जब उसने कथित रूप से सोशल मीडिया पर एक आपत्तिजनक टिप्पणी पोस्ट की थी।

रंजीत कासले ने इससे पहले एक सनसनीखेज दावा भी किया था कि उसे पिछले साल दिसंबर में मस्साजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या के मुख्य संदिग्ध वाल्मीक कराड की हत्या की "सुपारी" दी गई थी। उसने आरोप लगाया था कि उसे इस काम के बदले मोटी रकम की पेशकश की गई थी। हालांकि, इस दावे की कोई ठोस पुष्टि नहीं हो सकी थी।

अब सूरत डकैती मामले में गिरफ्तारी के बाद रंजीत कासले एक बार फिर कानूनी जाल में फँस गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, उससे यह जानने की कोशिश की जा रही है कि उसका अपराधियों से क्या सीधा संबंध था और क्या वह डकैती की योजना में किसी रूप में शामिल था या केवल रसद सहायता तक ही उसकी भूमिका सीमित थी।

इस गिरफ्तारी के बाद पुलिस महकमे में हलचल तेज हो गई है। रंजीत कासले जैसे बर्खास्त पुलिसकर्मी का आपराधिक गिरोहों से जुड़ाव पूरे विभाग की छवि पर भी सवाल खड़े कर रहा है। अधिकारी मानते हैं कि यह मामला पुलिस की नैतिक जवाबदेही और अनुशासन पर गहरी चोट करता है, क्योंकि एक समय वर्दी में रहने वाला व्यक्ति अब उसी तंत्र के खिलाफ अपराधों में शामिल पाया जा रहा है।

गुजरात पुलिस अब रंजीत कासले से पूछताछ कर सूरत डकैती कांड के और भी पहलुओं का खुलासा करने की उम्मीद कर रही है। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट हो सकेगा कि वह केवल अपराधियों को सहयोग दे रहा था या उनके साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था।

ओडिशा में अगले दो दिन भीषण बारिश और बिजली गिरने की चेतावनी, IMD ने जारी किया येलो अलर्ट

(जीएनएस)। भुवनेश्वर। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने ओडिशा में अगले 48 घंटों के लिए विशेष चेतावनी जारी की है। विभाग ने कहा है कि राज्य के कई हिस्सों में गरज के साथ भारी बारिश और बिजली गिरने की संभावना है, जिसके चलते लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। IMD के अनुसार, दक्षिण-पूर्वी बंगाल की खाड़ी में अगले 24 घंटों के भीतर एक निम्न दाब का क्षेत्र बनने की संभावना है, जो पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की दिशा में बढ़ते हुए मध्य और पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी पर अवदाब में परिवर्तित होगा। इस मौसम प्रणाली के प्रभाव से तटीय और आंतरिक जिलों में अगले दो दिनों में तेज बारिश और बिजली गिरने जैसी स्थितियां बन सकती हैं। IMD की निदेशक मनोरमा मोहंती ने बताया कि पिछले 24 घंटों में राज्य के कई इलाकों में छिटपुट बारिश

दर्ज की गई। सबसे अधिक 79 मिमी बारिश समपटना क्षेत्र में हुई। उन्होंने चेतावनी दी कि पुरी, कोरापुट, नबरंगपुर, गंजम और गजपति जैसे तटीय जिलों में अगले 24 घंटों में गरज के साथ तेज बारिश होने की संभावना है। इन जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। मनोरमा मोहंती ने जनता से अपील की कि वे अपने घरों, बिजली उपकरणों और खुले स्थानों में विशेष सतर्कता बरतें।

मौसम विभाग ने चेतावनी दी कि दक्षिण ओडिशा में 21 से 24 अक्टूबर तक छिटपुट बारिश होने की संभावना है, जबकि 24 से 26 अक्टूबर के बीच बारिश का स्तर और बढ़ सकता है। आगामी दिनों में रात के तापमान में गिरावट भी आ सकती है, जिससे ठंडक बढ़ सकती है। उन्होंने किसानों, मछुआरों और अन्य लोगों से नदियों और जलाशयों के किनारे न जाने, तेज हवाओं और ओले पड़ने जैसी स्थिति में अतिरिक्त सतर्कता बरतने की सलाह दी। IMD ने यह भी कहा कि शहरों में हल्की से मध्यम बारिश और गरज के बीच यातायात और सड़क पर भी सावधानी बरतनी चाहिए। मौसम विभाग की इस चेतावनी का उद्देश्य लोगों को संभावित प्राकृतिक आपदाओं से बचाना और राज्य में आवश्यक तैयारियों को बढ़ाना है। इसके तहत बिजली कटौती, जलभराव और सड़क दुर्घटनाओं जैसे जोखिमों से निपटने के लिए प्रशासन और नागरिक दोनों को सचेत रहने की जरूरत है।

विशेषज्ञों का कहना है कि बंगाल की खाड़ी में निम्न दाब और अवदाब जैसी मौसम प्रणाली इस समय वर्षा के पैटर्न को प्रभावित कर रही है, जिसके कारण ओडिशा में अगले दो दिनों में बारिश अधिक तीव्र हो सकती है। जनता से अपील की गई है कि वे बारिश के दौरान अनावश्यक रूप से बाहर न निकलें, बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखें, और जरूरत पड़ने पर स्थानीय आपदा प्रबंधन अधिकारियों की मदद लें। राज्य सरकार और मौसम विभाग की इस चेतावनी के बाद प्रशासन ने तटीय जिलों में आपातकालीन तैयारियों को तेज कर दिया है।

बेंगलुरु में डॉक्टर पर यौन उत्पीड़न का आरोप, महिला की शिकायत के बाद गिरफ्तार

(जीएनएस)। बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है, जहां एक 21 वर्षीय महिला ने अपने निजी क्लिनिक में एक चिकित्सक पर यौन उत्पीड़न का गंभीर आरोप लगाया है। महिला ने शिकायत में बताया कि क्लिनिक में अकेले रहने के दौरान चिकित्सक ने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया और उसे मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान किया। पुलिस ने शिकायत दर्ज कर डॉक्टर को हिरासत में ले लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

महिला ने अपनी शिकायत में कहा कि उसे त्वचा संक्रमण की जांच के बहाने क्लिनिक में बुलाया गया था। उस दौरान चिकित्सक ने कथित रूप से उसके शरीर को छुआ, उसे गले लगाया और किस किया। विरोध करने के बावजूद उसने अश्लील हरकतें जारी रखी। महिला ने आरोप लगाया कि चिकित्सक ने उसे कपड़े उतारने के लिए मजबूर किया और कहा कि यह इलाज का हिस्सा है। इसके अलावा, डॉक्टर ने उसे होटल के कमरे में

निजी समय बिताने का सुझाव भी दिया। महिला ने बताया कि आम तौर पर वह अपने पिता के साथ क्लिनिक जाती थी, लेकिन उस दिन वह अकेली थी, जिससे चिकित्सक ने उसका फायदा उठाने का प्रयास किया।

मामला सार्वजनिक होते ही महिला के परिवार ने क्लिनिक के बाहर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने चिकित्सक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने तुरंत मौके पर पहुंचकर चिकित्सक को हिरासत में ले लिया। इस दौरान चिकित्सक ने दावा किया कि महिला ने उसके कामों को गलत तरीके से समझा।

कर्नाटक पुलिस ने बताया कि चिकित्सक के खिलाफ आईपीसी की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है। सुरक्षा और महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता को ध्यान में रखते हुए पुलिस पूरे मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। इस घटना ने बेंगलुरु में चिकित्सकों और मरीजों के बीच विश्वास, और सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं।

गुजरात पुलिस ने बर्खास्त उपनिरीक्षक रंजीत कासले को डकैती के मामले में महाराष्ट्र से गिरफ्तार कर सूरत में लाया

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात पुलिस ने बर्खास्त उपनिरीक्षक रंजीत कासले को सूरत में उनके खिलाफ दर्ज डकैती से जुड़े मामले में गिरफ्तार किया। कासले को महाराष्ट्र के लातूर से पकड़कर लाया गया। अधिकारियों ने सोमवार को इसकी पुष्टि की। गिरफ्तारी के बाद कासले ने नाटकीय अंदाज में कहा, "बॉस गिरफ्तार हो गया।" मालूम हो कि रंजीत कासले को कुछ महीने पहले महाराष्ट्र सरकार ने बर्खास्त किया था। उसके खिलाफ आरोप है कि वह पिछले साल बीड सरपंच हत्याकांड के मुख्य संदिग्ध वाल्मीक कराड को मारने की सुपारी लेने में शामिल था। अपराध शाखा के निरीक्षक सुधाकर ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि सूरत के पास पाल पुलिस थाने में कासले के खिलाफ डकैती का मामला दर्ज था। इस मामले में गुजरात पुलिस की टीम लातूर पहुंची और रविवार रात करीब 10:30 बजे कासले को गिरफ्तार किया।

एक अन्य अधिकारी ने बताया कि सूरत मामले में पहले ही गिरफ्तार किए गए अन्य संदिग्धों ने पूछताछ के दौरान लुटेरों की मदद में कासले की कथित भूमिका की ओर इशारा किया। इस गिरफ्तारी के बाद मामले की जांच में नई दिशा मिलने की संभावना है।

पुलिस ने कहा है कि मामले की विस्तार से जांच जारी है और जल्द ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। इस घटना ने न केवल सूरत में अपराध और सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं, बल्कि पूर्व पुलिसकर्मी द्वारा अपराध में कथित संलिप्तता की गंभीरता को भी उजागर किया है।

जहानाबाद में नामांकन के बाद एआईएमआईएम प्रत्याशी की गिरफ्तारी, हार्ट अटैक के बाद पटना रेफर

(जीएनएस)। जहानाबाद। बिहार विधानसभा चुनाव के नामांकन के अंतिम दिन सोमवार को जहानाबाद में राजनीतिक हलचल ने नया मोड़ लिया जब असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलिमीन (एआईएमआईएम) के प्रत्याशी और नगर परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष मो. कलाम उद्दीन को नामांकन के तुरंत बाद गिरफ्तार कर लिया गया। कलाम उद्दीन पर हत्या के प्रयास से जुड़े पुराने मामले में आरोप था और उनके खिलाफ काको थाना में केस दर्ज था। गिरफ्तारी की पुष्टि थानाध्यक्ष राहुल कुमार ने की। जैसे ही कलाम उद्दीन को गिरफ्तार किया गया, उनके समर्थक आक्रोशित हो गए और सदर थाना में जमकर हंगामा किया। गिरफ्तारी के बाद

कलाम उद्दीन को थाने से सदर अस्पताल लाया गया, जहां अचानक उन्हें हार्ट अटैक आया। स्थिति गंभीर होने के कारण चिकित्सकों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए पटना के पीएमसीएच रेफर कर दिया। अस्पताल में मौजूद उनके समर्थक और स्थानीय निवासी बड़ी संख्या में वहां पहुंचे और उनकी तबीयत के बारे में जानकारी लेने की कोशिश की।

कलाम उद्दीन जहानाबाद विधानसभा सीट से एआईएमआईएम के उम्मीदवार के रूप में नामांकन कर चुके थे। उनके नामांकन के तुरंत बाद हुई गिरफ्तारी ने राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बना दिया। समर्थकों ने इसे साजिश करार देते हुए जमकर विरोध किया। यह जहानाबाद में किसी भी प्रत्याशी के नामांकन के दौरान हुई पहली गिरफ्तारी थी।

कलाम उद्दीन स्थानीय मुस्लिम समाज में सक्रिय और प्रभावशाली रहे हैं। ओवैसी की पार्टी ने उनकी सामाजिक और राजनीतिक पकड़ को देखते हुए उन्हें उम्मीदवार बनाया। गिरफ्तारी और स्वास्थ्य संकट के बीच स्थानीय लोग अस्पताल पहुंचकर उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने लगे।

इस घटना ने चुनावी प्रक्रिया के दौरान सुरक्षा, कानून प्रवर्तन और राजनीतिक समीकरणों पर भी बहस छेड़ दी है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि गिरफ्तारी ने चुनावी मैदान में प्रत्याशियों और पार्टियों के बीच तनाव को बढ़ाया है और इसके प्रभाव आने वाले चुनाव परिणाम पर पड़ सकते हैं। पुलिस फिलहाल पूरे मामले पर विस्तृत टिप्पणी करने से बच रही है, लेकिन स्थिति ने राजनीतिक दलों और जनता दोनों के बीच संवेदनशीलता और गहरी चिंता पैदा कर दी है।

झामुमो ने बिहार चुनाव से पीछे हटकर जताया विरोध, कांग्रेस-राजद पर लगाए आरोप

(जीएनएस)। झारखंड। सत्ताधारी झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने सोमवार को स्पष्ट किया कि वह बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में हिस्सा नहीं लेगी। पार्टी ने यह निर्णय अपने सहयोगी राजद और कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए लिया कि उनके कथित "राजनीतिक साजिश" के चलते झामुमो को महागठबंधन में उचित सीटें नहीं दी गईं। झामुमो के वरिष्ठ नेता सुदिव्य कुमार ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि पार्टी ने बिहार में चुनाव न लड़ने का फैसला इसलिए लिया क्योंकि राजद और कांग्रेस ने गठबंधन में उनकी सीटों को अनदेखा किया। उन्होंने कहा, "राजद और कांग्रेस ने राजनीतिक साजिश के तहत झामुमो को चुनाव में भाग लेने से वंचित किया। हम इसका करारा जवाब देंगे और अपने गठबंधन संबंधों की समीक्षा करेंगे।"

यह घोषणा झामुमो द्वारा बिहार में अकेले चुनाव लड़ने और छह विधानसभा क्षेत्रों—चकाई, धमदाहा, कटोरिया, मनिहारी, जमुई और पीरपैंती—में प्रत्याशी उतारने की घोषणा के दो दिन बाद आई है। इन क्षेत्रों में मतदान 11 नवंबर को दूसरे चरण में होना है। पार्टी ने कहा कि सीट बंटवारे पर वार्ता विफल रहने के कारण यह निर्णय अनिवार्य रूप से लिया गया।

राज्य के पर्यटन मंत्री कुमार ने भी आरोप लगाया कि राजद और कांग्रेस की साजिश के कारण झामुमो को चुनाव लड़ने से रोकने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि पार्टी इस नापसंदगी का जवाब देने के लिए हर संभव कदम उठाएगी और गठबंधन की समीक्षा करेगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि झामुमो का यह कदम बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की स्थिति पर प्रत्यक्ष असर डाल सकता है। पार्टी की गैर-भागीदारी से गठबंधन को कुछ सीटों पर कमजोर होने का जोखिम है और विपक्षी दलों के लिए रणनीति बदलने की आवश्यकता उत्पन्न हो गई है।

इस घटना के बाद बिहार चुनाव की राजनीतिक लड़ाई और अधिक जटिल हो गई है, और अब यह देखना दिलचस्प होगा कि झामुमो के कदम से महागठबंधन और एनडीए के बीच सत्ता समीकरण किस तरह प्रभावित होता है।

दिल्ली पुलिस ने जेएनयू छात्र आंदोलन के बाद छह छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज किया

(जीएनएस)। नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में छात्रों और पुलिस के बीच हुई झड़प के एक दिन बाद दिल्ली पुलिस ने छह छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें शांति बनाए रखने के लिए बॉण्ड भरवाया। इसमें छात्र संघ के तीन पदाधिकारी भी शामिल हैं। इस कार्रवाई के पीछे पुलिस का तर्क था कि वसंत कुंज (उत्तर) पुलिस थाने तक आयोजित विरोध मार्च के दौरान छात्रों ने बैरिकेड तोड़कर यातायात बाधित किया और छह पुलिसकर्मी घायल हुए।

बॉण्ड भरने वाले छात्रों में जेएनयू छात्रसंघ के अध्यक्ष नीतीश कुमार, उपाध्यक्ष मनीषा, महासचिव मुन्तेहा फातिमा और अन्य छात्र मणिकांत पटेल, ब्रिटी कर एवं सौर्य मजूमदार शामिल हैं। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने बताया कि बॉण्ड के तहत छात्रों को कानूनी तौर पर बुलाए जाने पर

जांच अधिकारी के सामने पेश होना होगा और यदि वे शहर छोड़ने का इरादा रखते हैं, तो पुलिस को पहले सूचित करना होगा। पुलिस ने कहा कि वसंत कुंज (उत्तर) पुलिस थाने में छात्रों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। इसके अलावा 28 अन्य छात्रों को दिल्ली पुलिस अधिनियम की धारा 65 के तहत हिरासत में लिया गया और बाद में चिकित्सा परीक्षण के बाद रिहा किया गया।

छात्र संगठनों का आरोप है कि नेल्सन मंडेला मार्ग पर आयोजित विरोध मार्च के दौरान पुलिस ने छात्रों पर बर्बर हमला किया और उन्हें तितर-बितर करने की कोशिश की। यह विरोध मार्च अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के सदस्यों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग को लेकर आयोजित किया गया था। छात्र संगठनों ने आरोप लगाया कि हाल ही में परिसर में हुई एक आम सभा में आरएसएस समर्थित समूह ने वामपंथी छात्रों पर हमला किया था।

जेएनयू शिक्षक संघ ने इस पुलिस कार्रवाई की निंदा करते हुए इसे 'अनुपातहीन और राजनीति से प्रेरित' करार दिया और प्रशासन से विश्वविद्यालय की लोकतांत्रिक छात्र राजनीति की परंपरा की रक्षा करने का आग्रह किया। पुलिस ने आरोपों से इनकार करते हुए कहा कि यह कार्रवाई व्यवस्था बनाए रखने और तनाव बढ़ने से रोकने के लिए आवश्यक थी।

इस घटना ने जेएनयू में छात्र राजनीति और सुरक्षा व्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती को एक बार फिर उजागर कर दिया है।

वीआईपी ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिए 15 उम्मीदवारों की सूची जारी की, संतोष सहनी गौरा बौराम से चुनावी मैदान में

(जीएनएस)। पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) ने सोमवार को अपनी 15 उम्मीदवारों की आधिकारिक सूची जारी कर दी है। पार्टी ने पिछड़े और हाशिए पर पड़े समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है और राज्य में विपक्षी महागठबंधन की ताकत बढ़ाने की रणनीति तैयार की है। वीआईपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता देव ज्योति ने पुष्टि की कि पार्टी अध्यक्ष संतोष सहनी दरभंगा जिले के गौरा बौराम से चुनाव लड़ेंगे।

सूची में अन्य प्रमुख उम्मीदवारों में आलमनगर से नवीन कुमार, कुशेश्वरस्थान से गणेश भारती सदा, दरभंगा शहरी से उमेश सहनी, औराई से भोगेंद्र सहनी, बरूराज से राकेश कुमार, और चैनपुर से बिहार प्रदेश अध्यक्ष बाल गोविंद बिंद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त रणकौशल प्रताप सिंह (लौरिया), शशि भूषण सिंह (सुगौली), वरुण विजय (केसरिया), हरिनारायण प्रमाणिक (सिकटी), सौरव कुमार अग्रवाल (कटिहार), अर्पणा कुमारी मंडल (बिहपुर), प्रेम सागर (गोपालपुर) और बिंदु गुलाब यादव (बाबूबरही) को भी पार्टी ने मैदान में उतारा है।

देव ज्योति ने कहा कि वीआईपी पूरी ताकत के साथ चुनावी मैदान में उतर रही है और पार्टी बिहार में अगली सरकार बनाने में महागठबंधन की मदद करने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाएगी। उन्होंने यह भी दावा किया कि जनता की भावना बदलाव की पक्षधर है और मतदाताओं का झुकाव विपक्षी गठबंधन की ओर है।

हालांकि, पार्टी को अंदरूनी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। इससे पहले वीआईपी ने दो अलग-अलग उम्मीदवारों की सूची जारी की थी। पहली सूची में राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष सहनी समेत छह नाम शामिल थे, जबकि दूसरी सूची में प्रदेश अध्यक्ष बाल गोविंद बिंद समेत पांच और उम्मीदवारों के नाम घोषित किए गए थे।

वीआईपी की मुश्किलें तब और बढ़ीं जब पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता राजेश साहनी, बिट्टू पासवान और पूर्व पार्टी अध्यक्ष राजेश प्रजापति अपने कई समर्थकों के साथ शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। उन्होंने एनडीए की जीत सुनिश्चित करने के लिए काम करने का संकल्प लिया।

पार्टी की नई सूची और प्रमुख नेताओं का चुनावी मैदान में उतरना बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में वीआईपी की रणनीति और महागठबंधन में उसकी भूमिका पर भी महत्वपूर्ण असर डाल सकता है। मतदाता और राजनीतिक विश्लेषक इस बदलाव को बड़े ध्यान से देख रहे हैं, क्योंकि पार्टी पिछड़े और हाशिए पर पड़े समुदायों के वोट बैंक पर विशेष ध्यान दे रही है।

बेंगलुरु में मॉल की तीसरी मंजिल से कूदकर युवक ने ली जान

(जीएनएस)। बेंगलुरु। सोमवार सुबह बेंगलुरु के जी टी मॉल में एक दुखद घटना घटी, जब 34 वर्षीय युवक सागर ने मॉल की तीसरी मंजिल से कूदकर कथित रूप से आत्महत्या कर ली। पुलिस ने इस मामले की पुष्टि की और बताया कि प्रारंभिक जांच में किसी भी तरह की आपराधिक गड़बड़ी के संकेत नहीं मिले हैं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मृतक सागर पहले इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था लेकिन उसे बीच में ही छोड़ना पड़ा था। परिवार के सदस्यों ने पुलिस को बताया कि सागर को पिछले समय से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं थीं और उसका इलाज चल रहा था। वह अविवाहित और बेरोजगार था।

मॉल में इस घटना के समय काफी लोग मौजूद थे, लेकिन सागर की अचानक कूदने से मौके पर अफरातफरी मच गई। पुलिस ने कहा कि घटना स्थल पर सभी साक्ष्य एकत्र कर लिए गए हैं और मामले की पूरी तरह से जांच की जा रही है।

पुलिस ने परिवार के सदस्यों से भी बातचीत की और यह सुनिश्चित किया कि सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी हों। इस घटना ने बेंगलुरु में मानसिक स्वास्थ्य और तनाव से जुड़े मामलों पर एक बार फिर गंभीर चेतावनी दी है।

अहमदाबाद में पति का जलवासा, पत्नी को किसी और के साथ देखकर फास्ट फूड मैनेजर की चाकू मारकर हत्या

(जीएनएस)। अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद शहर में एक भयावह और दर्दनाक घटना ने स्थानीय लोगों को सकते में डाल दिया है। अमराईवाड़ी इलाके में रविवार की दोपहर एक 30 वर्षीय पति ने अपने जलवासे और शक के चलते फास्ट फूड रेस्टोरेंट के 27 वर्षीय मैनेजर गोपाल राठौड़ की चाकू मारकर हत्या कर दी। घटना के पीछे का कारण पति का यह विश्वास था कि गोपाल और उसकी पत्नी के बीच अवैध संबंध हैं। यह मामला न केवल व्यक्तिगत हिंसा का उदाहरण है, बल्कि सामाजिक और मानसिक दबावों के कारण उत्पन्न अपराध की गंभीरता को भी दर्शाता है।

पुलिस के अनुसार, गोपाल राठौड़ न्यू भवानीनगर स्थित एक फास्ट फूड रेस्टोरेंट में मैनेजर के रूप में कार्यरत था। उसकी मुलाकात उसी रेस्टोरेंट में 24 वर्षीय युवती से हुई थी, जो अब उसकी दोस्त बन गई थी। रविवार को गोपाल उस युवती से मिलने उसके घर गया। उसी समय युवती का पति किसी काम से बाहर गया था। जब वह घर लौटा और अपने पत्नी को गोपाल के साथ देखा, तो उसका गुस्सा और जलन उबल पड़ी।

आगबबूला पति ने तुरंत रसोई से चाकू उठाया और गोपाल के गर्दन और कंधे पर कई वार किए। वारदात इतनी तेज़ थी कि गोपाल बुरी तरह से घायल हो गया। युवती और आसपास के लोग उसे अस्पताल ले गए, लेकिन गंभीर चोटों के कारण डॉक्टरों ने उसे

मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की गंभीरता को देखते हुए एफआईआर दर्ज कर आरोपी को पकड़ने के प्रयास शुरू किए। घटना के अगले ही दिन पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और उससे पूछताछ शुरू कर दी।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी ने पहले भी हिंसक प्रवृत्ति दिखाई थी और इस घटना की योजना में मानसिक रूप से उत्तेजित स्थिति की भूमिका रही। घटना ने इलाके के लोगों में भय और चिंता पैदा कर दी है। स्थानीय समाज और पुलिस प्रशासन ने इस घटना को गंभीरता से लिया है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

विशेषज्ञों का मानना है कि घरेलू तनाव, अविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी अक्सर इस तरह की हिंसक घटनाओं का कारण बनती है। उन्होंने चेतावनी दी है कि समाज और परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य, परिवारिक विवाद और गुस्से के प्रबंधन के लिए जागरूक होना चाहिए। इस घटना ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि अविश्वास और ईर्ष्या की स्थिति में हिंसा किसी भी सीमा तक बढ़ सकती है और इसके लिए समय रहते रोकथाम और संवेदनशील निगरानी की आवश्यकता है।

इस घटना ने अहमदाबाद में कानून व्यवस्था और घरेलू हिंसा के मामलों पर नई बहस शुरू कर दी है। पुलिस पूरे इलाके में निगरानी बढ़ा रही है और समाज को जागरूक करने के लिए अभियान चलाने की योजना बना रही है। वहीं, मृतक के परिवार और समाज के लोग न्याय की मांग कर रहे हैं और आरोपी की सख्त से सख्त सजा की उम्मीद कर रहे हैं। यह घटना स्पष्ट रूप से यह संदेश देती है कि घरेलू विवाद और अविश्वास कभी भी जानलेवा हिंसा में बदल सकते हैं और इसके लिए समाज और प्रशासन को सतर्क रहने की आवश्यकता है।